© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 11 | October – December 2017

बुंदेलखंडी सहायक क्रिया : संरचनात्मक स्वरूप

योगिता रानी, yogitakharb40@gmail.com

प्रस्तावना

भारतीय भाषाओं की अपनी एक परंपरा रही है, इस परंपरा में सबसे पुरानी और प्राचीन भाषा संस्कृत मानी जाती है। ''संस्कृत भारती उप महादीप की एक उपभाषा है। इसे देववाणी अथवा सूर भारती भी कहा जाता है। ये विश्व की सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक है। भाषाओं के इसी इतिहास में संस्कृत से विकसित हिन्दी भाषा का भी अपना एक स्थान रहा है। हिन्दी भारतीय विश्व की एक प्रमुख भाषा है एवं भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। इसकी विविधता और विश्व आर्थिक मंच पर इसकी महत्वता हमें विश्व की शक्तिशाली भाषाओं में से एक बनाती हैं। भारत में हिन्दी भाषा की विभिन्न बोलियां पाई जाती हैं। जिनमें बुंदेलखंडी एक व्यापक क्षेत्र में बोली जाने वाली पश्चिमी हिन्दी की महत्वपूर्ण बोली है। इसकी महत्वता इस बात से ह कि केवल संस्कृत या हिन्दी पढ़ने वालों को बुंदेलखंडी शब्दों के अर्थ को समझना आसान नहीं होता बुंदेलखंडी अपने आप में हजारों शब्दों को संग्रहित किए हुए है। बुंदेलखंडी के पास ऐसे कई शब्दों के भंडार है जिसे समझना अन्य भाषियों के लिए आसान नहीं होता। बुंदेलखंडी की अपने आप में एक प्राचीन परंपरा भी रही है जिसके अंतर्गत शासकीय पत्र व्यवहार जिसके अंतर्गत बुंदेलखंडी राजाओं के द्वारा शासकीय पत्र व्यवहार, संदेश, बीजक, राजपत्र एवं मैत्री संधियों के अभिलेख प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। ऐसा माना जाता है कि औरंगजेब और शिवाजी भी ''बुंदेलखंडी क्षेत्रों के हिन्दी राजाओं से बुंदेलखंडी में ही पत्र व्यवहार करते थे।'' बुदेलखंडी व्याकरणिक दृष्टि से भी बहुत मजबूत और समृद्ध मानी जाती है। बुंदेलखंडी के अपने शब्दकोश, कहानी, उपन्यास, राजाओं कि वीर गाथाएं, क्रांतिकारी इतिहास, लोकोक्ति, मुहावरे, व्याकरण इसके प्रमाण है। स्थान और भाषा सीमाओं Grierson 1968 Vol. IX में उल्लेख है कि बुंदेली मध्यप्रदेश के प्रमुख भाशाओं में से एक है यह पूर्व में उत्तर और उत्तर पश्चिम हिन्दी के निकट से संबंधित कन्नौज और ब्रज बोलियों द्वारा पूर्वी हिन्दी के बघेली से घिरा है।'' ''बुंदेलखंडी से संबंधित बहुत सी निकट बोलिया पाई जाती है। ग्रियर्सन ने अपने LSI (Vol. XI, Part I) के अंतर्गत 14 बुंदेलखंडी बोलियों को उल्लेख किया है'', जो बुंदेली से निकट हैं। ये बोलियाँ निम्नलिखित हैं – मानक बुंदेलखंडी, खटोला, लोधानी पवारी, बनाफरी, कुन्द्री, निभट्टा, भदौरी और तोवारगढ़ि, लोधी, छिंदवाड़ा, बुंदेलखंडी, नागपुरी हिन्दी, कोस्ती, कुंभारी।

बुंदेलखंडी क्रिया : संरचनात्मक स्वरूप

बुंदेलखंडी क्रियाएँ भी हिन्दी क्रियाओं की भांति ही व्यवहार करती हैं। बुंदेलखंडी क्रियाओं में 'ना' प्रत्यय की जगह 'बौ/वो' प्रत्यय का प्रयोग होता है। जिन शब्दों से किसी कर्म के होने या करने या किसी प्रक्रिया में होने का बोध हो उन शब्दों को क्रिया कहते हैं। क्रिया वाक्य का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। क्रिया के बिना वाक्य की संरचना संभव नहीं मानी जाती। क्रिया किसी भी प्रकार के वाक्य को गति प्रदान करने की क्षमता रखती हैं। क्रिया के माध्यम से ही वाक्य के पूर्ण और अपूर्ण होने का पता चलता है।

उदाहरण :– क. राम पुस्तक पढ़त है। ख. राम पुस्तक पढ़ रहौ है। ग. राम ने पुस्तक पढ़ लई है।

उपरुक्त दिये गये तीनों वाक्यों में एक ही क्रिया 'पढ़' (To Read) का प्रयोग हुआ है। किन्तु क्रमशः दिये गये तीनों वाक्यों में कर्म के पूर्ण होने का बोध अलग–अलग हो रहा है। क्रिया का निर्माण धातु (Root) से होता है। दूसरे शब्दों में यदि परिभाषित किया जाए तो क्रिया के मूल स्वरूप को ही हम धातु कह सकते हैं। जैसे – पढ़, लिख, खा, दौड़, खेल, सुन, बैठ आदि ये सभी धातु रूप क्रियाओं के ही मूल रूप हैं। इन्हीं धातु रूप में 'ना' प्रत्यय लगाकर प्रयुक्त किए जाने वाले रूप को क्रिया कहा जाता है।

	धातु	+	ना – क्रिया
हिन्दी – खेल		+	ना – खेलना
बुंदेलखंडी –	खेल	+	बौ – खेलबौ

बुंदेलखंडी भाषा में भी क्रिया के दो भेद मिलते हैं जो निम्न प्रकार हैं – 'मुख्य क्रिया' और 'सहायक क्रिया'।

बुंदेलखंडी – 1. मुख्य क्रिया 2. सहायक क्रिया

1. **मुख्य क्रिया –** क्रिया पदबंध का वह अंश जो कोशीय अर्थ वहन करता है, मुख्य क्रिया कहलाता है जैसे, पढ़, चल, मना कर, भूल जा, आदि।

सरल क्रिया – 'क्रिया' का निर्माण धातु से होता है और धातु से बनने वाली अधिकांश क्रियाएँ एक शब्द की होती, जिन्हें 'एकल' या सरल क्रियाएँ (Simple Verbs) कहते हैं। इनमें धातु के अकर्मक, सकर्मक और प्रेरणार्थक प्रथम एवं द्वितीय सभी रूप शामिल हैं।

उदाहरण – बुंदेलखंडी – राम आम खात है।
हिन्दी – राम आम खाता हैं।

संयुक्त क्रिया – हिन्दी वाक्य संरचना में 'संयुक्त क्रिया' (Compound Verb) दो मुख्य क्रियाओं के संयोग से निर्मित होती हैं। इन दोनों मुख्य क्रियाओं में पहली क्रिया 'कोशीय क्रिया' (Lexical Verb) और दूसरी क्रिया में पक्ष (Aspect), वृत्ति (Voice), तथा काल (Tense) रूप के प्रत्यय जुड़े होने के कारण इस क्रिया को 'रंजक क्रिया' (Intensifier) कहते हैं। वाक्य में प्रयुक्त प्रथम क्रिया (कोशीय क्रिया), हिन्दी वाक्य संरचना में स्वतन्त्र रूप से कोशीय अर्थव्यक्त नहीं करती बल्कि वह अपना स्वतंत्र कोशीय अर्थ खो देती है और अपने साथ जुड़े पहली क्रिया को ही रंजित करती है, उसके अर्थ में विस्तार करती हैं।

उदाहरण – बुंदेलखंडी – हमने खाना खालओ।
हिन्दी – मैनें खाना खालिया।

मिश्र क्रिया – हिन्दी में मिश्र क्रिया की रचना संज्ञा, विशेषण या क्रियांगी शब्दों के साथ 'कर' 'हो' आदि क्रियाकरों (Verbalizers) के संयोग से होती हैं। मिश्र क्रिया के प्रथम घटक को क्रियामूल कहते हैं, इसकी संरचना में संज्ञा या विशेषण होते हैं तथा दूसरा घटक क्रियाकर, जिसकी संख्या हिन्दी में सीमित होती हैं। मिश्र क्रिया संरचना में दूसरे घटक के रूप में प्रयुक्त क्रिया मूलतः संज्ञा और विशेषण के साथ मिलकर अर्थ के स्तर पर एकल अर्थीय इकाई (Single Semantic Unit) का निर्माण करते हैं।

उदाहरण –

1. बुंदेलखंडी – ऊने सभा शुरू करी।
   हिन्दी – उसने सभा आरंभ की।
2. बुंदेलखंडी – राम ने सीता से वादो करो।
   हिन्दी – राम ने सीता से वादा किया।
3. बुदेलखंडी – मेने मीरा की गाड़ी अच्छ करी।
   हिन्दी – मैनें मीरा की कार ठीक की।

उपयुक्त उदाहरण में वाक्य 1. में 'शुरू करना' एक आर्थी इकाई है। जिसमें 'शुरू' (Start) एक भाववाचक संज्ञा है, जो क्रियाकर 'करी' (Verbalizer) के साथ मिलकर एकल आर्थीय इकाई (Single Semantic Unit) का निर्माण कर रहा है। वाक्य 2. में 'वादो करबो' (Promise) एक आर्थी इकाई है। जिसमें 'वादो' एक भाववाचक संज्ञा है, जो क्रियाकर 'करो' के साथ मिलकर एकल अर्थीय इकाई (Single Semantic Unit) बना रहा है। वाक्य 3. में 'अच्छी करी' एक आर्थी इकाई है। जिसमें अच्छी (Maintained) एक विशेषण है। जो क्रियाकर 'करी' (Verbalizer) के साथ मिलकर एकल अर्थीय इकाई (Single Semantic Unit) का निर्माण कर रहा हैं।

सहायक क्रिया – हिन्दी क्रियापदबंध का वह अंश जो व्याकरणिक सूचना वहन करता है, सहायक क्रिया कहलाता है, जैसे – 'ता है', 'ता था', 'थ', 'एगा' आदि। हिन्दी में सहायक क्रियाओं के अंतर्गत वाच्य, पक्ष, काल, वृत्ति संबंधी प्रत्यय या चिन्नहक शामिल होते हैं। ये सभी हिन्दी की वाक्य स्तरीय व्याकरणिक कोटियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। हिन्दी भाषा में सहायक क्रिया की एक विशेष स्थिति होती है। भारतीय भाषाओं (बांग्ला, असमिया, उड़िया, मराठी आदि) की प्रवृत्ति सहायक क्रियाओं की नहीं है। हिन्दी क्रियापदबंध संरचना मुख्य रूप से दो क्रियाओं के संयोग से निर्मित होती है। जिसमें प्रथम क्रिया के रूप में मुख्य क्रिया और दूसरी क्रिया के रूप में सहायक क्रिया क्रमशः प्रयुक्त होती है। वाक्य संरचना में जहाँ मुख्य क्रिया कोशीय अर्थ प्रदान करती हैं वही सहायक क्रिया वाक्य में व्याकरणिक सूचना (काल, वाच्य, पक्ष, लिंग, वचन आदि) वहन करती है। व्याकरणिक सूचना का तात्पर्य सहायक क्रिया के साथ प्रयुक्त होने वाली व्याकरणिक संबंधी प्रत्यय या चिन्ह से है जो वाक्य को पूर्ण एवं अर्थवान बनाते हैं और हिन्दी के वाक्य स्तरीय व्याकरणिक कोटियों को प्रतिनिधित्व भी करते हैं। सहायक क्रिया को 'गौण क्रिया' भी कहा जाता है।

उदाहरण – क. बुंदेलखंडी – राम बाजार जान लगो।
हिन्दी – राम बाजार जाने लगा।
ख. बुंदेलखंडी – सीता रोन लगी।
हिन्दी – सीता रो पड़ी।
ग. बुंदेलखंडी – उ एक अच्छों आदमी तो।

हिन्दी – वह एक अच्छ इंसान था।

उपर्युक्त तीनों वाक्यों की संरचना भिन्न है, प्रथम वाक्य (क) में 'जान लगो' क्रियापद है, जिसमें 'जान' प्रथम क्रिया (VI) और दूसरी क्रिया 'लगो' (V2) है जिसके अंत में प्रत्यय 'को' जुडा होने से वाक्य में व्याकरणिक सूचना प्राप्त हो रही है जिससे यह क्रिया 'सहायक क्रिया' की श्रेणी में आएगी। वाक्य (ख) में प्रयुक्त शब्द 'लगी' एक सहायक क्रिया के रूप में प्रयुक्त हो रही है, जो वाक्य में सीधे तौर पर 'रो' (रोना) के कार्य व्यापार को पूर्ण कर रही है, और साथ ही लिंग, वचन और पुरूष आदि की भी सूचना प्रदान कर रही है। वाक्य (ग) में 'तो' निःसंदेह मुख्य क्रिया है, जिसे 'कॉप्युला' भी कहा जाता है। 'कॉप्युला' कोई कोशीय क्रिया नहीं होती है। जिस वाक्य में कोई कोशीय क्रिया न हो, वहां उस वाक्य में प्रयुक्त सहायक क्रिया ही मुख्य क्रिया के रूप में व्यवहार करती है। जैसे – 'उ' एक अच्छों आदमी तो वाक्य में 'तो' ही मुख्य क्रिया है। इस शोध पत्र में बुंदेलखंडी सहायक क्रिया से संबंधित उसकी व्याकरणिक संरचना को व्याख्यायित किया गया है।

हिन्दी सहायक क्रिया का व्याकरणिक ढाँचा

हिन्दी व्याकरण में सहायक क्रिया का अध्ययन एक लंबे समय अवधि से होता आ रहा है। सहायक क्रिया के व्याकरणिक ढाँचा का तात्पर्य उसके व्याकरणिक कोटियों (काल, पक्ष, वृत्ती, लिंग, वचन, पुरूष) से है, जो सहायक क्रिया में प्रत्यय के रूप में जुड़ती है और वाक्य में व्याकरणिक अर्थ प्रदान करती हैं। व्याकरणविदों में एस.एच. केलॉग (1876), के.पी. गुरु (1920), के वाजपेयी (1958), यमुना काचरु (1966), एच आल्फेन (1975), सूरजभान सिंह (1997), ओमकार कौल (2008), आदि हुए हैं, जिन्होंने अपने–अपने ढंग से सहायक क्रिया के नए व्याकरणिक ढाँचे कि प्रस्तुत किया है। सहायक क्रियाओं से संबंधित व्याकरणविदों के विचार यहाँ दिए जा रहे हैं –

- ऐसी क्रियाएँ जो मुख्य क्रिया के सहायक रूप में प्रयुक्त होती हैं, उन्हें सहायक क्रिया कहते हैं।
- जिस क्रिया कि सहायता से संयुक्त काल बनाए जाते हैं, उन्हें सहायक क्रिया कहते हैं।
- मुख्य क्रिया के सहायक क्रिया के रूप में आकार उसके अर्थ को पूर्णता प्रदान वाली क्रिया, सहायक क्रिया कहलाती है।
- सहायक क्रिया सदैव काल, वचन और लिंग तथा पुरुष के लिए चिन्हित होती है।
- क्रियापदबंध का वह अंश जो व्याकरणिक सूचना देता है, सहायक क्रिया कहलाता है।
- सहायक क्रिया उस क्रिया को कहते हैं जो क्रिया पदबंध में मुख्य न होकर किसी–न–किसी रूप में सहायक मात्र होती है।

डॉ0 उदयनारायण तिवारी ने आँव, आय, आँय, बुंदेलखंडी के सहायक क्रिया के रूप बतलाये हैं। पर वास्तव में ये निश्चयात्मकता के ही बोवक है, सहायक क्रिया के साथ क्वचित ही प्रयुक्त होते हैं। डॉ0 सक्सेना ने इन्हें सहायक क्रिया के अवशेष चिन्ह कहा है। डॉ0 तेस्सीतोरीने इन्हें निश्चयात्मक सर्वनाम के अन्तर्गत ही स्थान दिया है। बुंदेलखंडी में प्रयुक्त यह 'आय' संस्कृत के 'अय' से विकसित जान पड़ता है। अपभ्रंश में भी इसके एह, एहि रूप वर्तमान हैं, जिनका प्रयोग संकेतबोधक सर्वनाम के रूप में हुआ है। बुंदेलखंडी में इसके आहौं, आहैं आदि रूपों का प्रयोग मिलता है, किन्तु यह प्रयोग मुख्य क्रिया के रूप में ही होता है सहायक क्रिया के रूप में नहीं यथा – आहौ, जहौ, आदि।

इन शब्दों 'आय' के रूप आहो (आय + हो), जाहो (जाय + हो) भविष्यवाची हैं। बुंदेलखंडी में कुछ प्रयोग अवश्य ऐसे मिलते हैं, जिनमें 'आय' के कुछ रूप सहायक क्रिया के रूप में प्रयुक्त दिखाई देते हैं। यथा – उए आवनैं हैं, बौ आओ है आदि। इससे यह स्पष्ट है कि बुंदेलखंडी में 'आय' तथा इसके तिडन्तीय रूपों का प्रयोग संकेतवाची सर्वनाम, निश्चयात्मक, मुख्य क्रिया एवम् सहायक क्रिया के रूप में होता है। बुंदेलखंडी की द्वितीय सहायक क्रिया 'हो' है, जिसका प्रयोग स्वरान्त तथा व्यञ्जनान्त दोनों प्रकार की धातुओं के साथ होता है। होहै, हुइऐ, हुइओ, हूओ आदि इसके उदाहरण हैं –

सहायक क्रियाओं का व्याकरणिक ढाँचा – समापिका क्रिया – काल पक्ष वृत्ति लिंग पुरुष वचन

क्रमांक	व्याकरणिक कोटि (Grammatical Category)	प्रतिपादक (Exponents)
समापिका क्रिया (Finite Verb)		
काल		
1.	वर्तमान काल	(हे/हो/हे)
2.	भूतकाल	(तो/ती/ते)
3.	भविष्यकाल	(हे/हे/हे)
पक्ष		
1.	नित्य पक्ष	(त/त/त)
2.	सातत्य पक्ष	(रओ/रई/रये)
3.	पूर्ण पक्ष	(ओ/ई/ये)

4.	पूरक पक्ष	(ओ/ई/ये)
	वृत्ति	
1.	आज्ञार्थक	(अ/ज/न)
2.	अनिश्चित संभाव्य	(त य / व य / ओ य)
3.	निश्चित संभाव्य	(त हुज्जे / व हुज्जे / ओ हुज्जे)
	लिंग–वचन	
1.	पुल्लिंग – एकवचन	(ओ)
2.	पुल्लिंग – बहुवचन	(ये)
3.	स्त्रींलिंग – बहुवचन	(यी)
4.	स्त्रीलिंग – बहुवचन	(यी)
	पुरुष–वचन	
1.	प्रथम पुरूष – एकवचन	(ऐ)
2.	प्रथम पुरूष – बहुवचन	(ये)
3.	मध्यम पुरूष – एकवचन	(ए)
4.	मध्यम पुरूष – बहुवचन	(एँ)
5.	अन्य पुरुष – एकवचन	(या)
	अन्य पुरुष – बहुवचन	(एँ/यें)
	वाच्य	
1.	कृर्तवाच्य	(क्रिया के सभी रूप)
2.	अकृर्तवाच्य	(या जा)

निष्कर्ष

सहायक क्रिया वस्तुतः अपूर्ण क्रियाएँ होती हैं। जब तक वे मुख्य क्रियाओं के साथ नहीं जुड़तीं, उनकी कोई सार्थकता नहीं है। इसके विपरीत मुख्य क्रिया भी बिना इनकी सहायता के अपने व्यापार में असमर्थ होती हैं। यथा – 'मैं जात हौं' इस वाक्य की मुख्य क्रिया 'हौं' है, पर जब तक वह मुख्य क्रिया 'जात' सहायक क्रिया का योग प्राप्त नहीं करती, तब तक केवल 'मैं हौं' कहने से कहने का तात्पर्य स्पष्ट नहीं होता। बुंदेलखंडी में जात, आत, खात, लात आदि क्रिया–रूपों के स्थान पर आउत, खाउत, लाउत आदि रूपों की प्रयोग भी सहायक क्रिया के रूप में होता है। यथा – मैं जाउत हौं, बौ आउत है आदि।

सन्दर्भ सूची

1. सिंह, सूरजभान : हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण।
2. श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ : हिन्दी भाषा : संरचना के विविध आयाम
3. तिवारी, भोलानाथ : हिन्दी की भाषिक संरचना
4. गुरु, कामता प्रसाद : हिन्दी व्याकरण
5. बासुतकर, महादेव मारुति : हिन्दी की क्रियापद व्यवस्था
6. गर्ग, महेशचन्द्र : परिनिष्ठित हिन्दी का रूप ग्रामिक अध्ययन, पृष्ठ संख्या – 79
7. Kachru, Yamuna : An Introduction to Hindi Syntax, Page No. 121
8. सिंह, सूरजभान : हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण, पृष्ठ संख्या – 58
9. तिवारी, भोलानाथ : हिन्दी भाषा की संरचना, पृष्ठ संख्या – 162
10. भारतीय साहित्य संग्रह : अध्याय बारह, वाच्य वर्ग
11. सृजन गाथा + संयुग्मित क्रिया मेन रूपको का महत्व
12. https://www.ethnologue.com/language/bns
13. https://hi.wikipedia.org
14. http://bharatdiscovery.org